हिमाचल प्रदेश की आधुनिक कला में आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल, शिमला की भूमिका

GAGAN DEEP
Research Scholar, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

प्रागैतिहासिक काल से ही भारतीय कला का इतिहास अत्यन्त रोमांचित रहा है। समय के साथ–साथ यह इतिहास गुढ़ होता जाता है और आधुनिक कला के विकास में अपनी आधारशिला रखता है। अजन्ता, ऐलोरा, सितनवासल बौद्ध और जैन कला के पश्चात् भारतीय कला में मुगल व राजपूत कला के दर्शन होते हैं। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश शासकों ने शासन किया और अंग्रेजी माध्यम में शिक्षा देने के लिए स्कूलों व विश्वविद्यालयों की स्थापना की। इन विद्यालयों में सर्वप्रथम मद्रास, कलकता, मुम्बई और लाहौर का नाम आता है। इन विद्यालयों के खुलने से तथा अंग्रेजी शिक्षा के चलते भारतीय धर्म तथा कला संस्कृति में अन्तर देखा गया। वैसे तो भारतीय धर्म तथा कला संस्कृति और धर्म को नुकसान मुसलमानों ने ही पहुँचा दिया था लैकिन इनके पश्चात् भी जो कुछ अस्तित्व रहा था वह अंग्रेजी शासन के समय समाप्त हुआ। लैकिन इतना कुछ होने के बावजूद भी भारतीय कलाकारों ने कला की पुर्नस्थापना के लिए प्रयास किए तथा अंग्रेजों द्वारा खोले विद्यालयों में ही भारतीय कला को पुनः जीवित किया। ब्रिटिश सरकार ने अपनी शासन व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए जगह–जगह पर स्कूल खोले। इन स्कूलों में से एक लाहौर स्कूल भी था जहाँ पर कला की शिक्षा भी दी जा रही थी। भारत विभाजन के पश्चात् ही मेयो स्कूल ऑफ आर्ट के दो फाड़ हो गए जिसमें एक भाग पाक्स्तिान, लाहौर में तथा दूसरा भाग पंजाब की राजधानी शिमला में आरम्भ किया गया। शोधार्थी ने आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला का उद्भव व विकास पर शोध पत्र प्रस्तुत किया है। जिसमें विभाजन के पश्चात् इस स्कूल में हुए उतार–चढ़ाव पर विस्तार से शोध करने का प्रयास किया है।

बीज शब्द

आधुनिक कला, आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल

भूमिका

अजन्ता, ऐलोरा, राजपूत और मुगल शैलियों के पश्चात् भारतीय चित्रकला में मौलिक रूप से विदेशी तत्वों का प्रवेश हुआ। भारत में ब्रिटिश शासन के समय भारतीय कला पर विदेशी कला का प्रभाव दृष्टिगौचर होता है। मुगल सम्राज्य के पतन के पश्चात् ही भारतीय कला में अन्तर देखा जाने लगा। ऐसे में मुगल शैली के चित्रकार आश्रय की खोज में पटना, कलकता व दिल्ली में जा बसे। यहाँ पर चित्रकारों ने चित्रण कार्य करते हुए एक विशिष्ट शैली को जन्म दिया जिसे पटना या कम्पनी शैली कहा गया। कुछ समय तक पटना शैली के चित्रकारों को ईस्ट इंडिया कम्पनी के यूरोपियन व्यवसाइयों और एंग्लो–इंडियन्स का संरक्षरण मिलता रहा। 19वीं शताब्दी में अंग्रजों ने विदेशी चित्रकला का भारत में बीजारोपण का प्रयास किया। इस समय भारतीय चित्रकला का पूर्णतः ह्रास हो चुका था और शासक वर्ग द्वारा अंग्रेजी संस्कृति तथा कला को रोपने का प्रयत्न किया जा रहा था। अंग्रेज शासकों द्वारा कला शिक्षा देने के लिए मद्रास, कलकता, बम्बई और लाहौर में आर्ट–स्कूलों की स्थापना की गई। इन स्कूलों में साधारण स्तर के यूरोपियन अध्यापकों के द्वारा कला शिक्षा प्रदान का जाती थी।

"कला क्षेत्रों, स्कूल, कॉलेज तथा अन्य संस्थाओं में लन्दन की 'रायल अकादमी ऑफ आर्ट' की तर्ज पर कला शिक्षा दी जाने लगी थी। सन् 1870 के लगभग भारत में फोटोग्राफी के आगमन से भी भारतीय कला परम्परा को भारी ठेस लगी। अंग्रजे यह चाहते थे कि इस देश में भारतीय कला के नाम से अभिहित की जाने वाली कोई चीज शेष नहीं रह जाए। ऐसी स्थिति में भारतीय कला के पक्षधरों, शुभ चिन्तकों, कलाकारों एवं विचारकों का चिन्तित होना स्वभाविक था। अतः ऐसे लोगों के समुदाय द्वारा यह सोचा गया कि एक ऐसा कला आन्दोलन चलाया जाए जिसके माध्यम से कला में लोप हो रही भारतीय परम्परा एवं संस्कृति को बचाया जा सके।"[1]

कला का पुनरूत्थान

"कला के क्षेत्र में भारत की नई पहचान का प्रयास किया ब्रितानी कलाविद् ई० वी० हैवेल ने।"[2]"1866 ई० में उन्होंने संसार का ध्यान भारतीय कला की और आकर्षित किया। भारतीय कला और संस्कृति के जागरण की और जब भारतीय जनता का ध्यान आकर्षित हो रहा था, उसी समय कलकता आर्ट स्कूल के प्रिंसिपल के रूप में हैवल आये। ई० वी० हैवल के सहयोग से बंगाल में एक नवीन कला आन्दोलन आरम्भ हुआ। हैवल ने बंगाली विद्यार्थियों को केवल विदेशी–रीतियों पर कला सिखाने की त्रुटि को समझा और उन्होंने भारतीय जीवन और आदर्श से पूर्ण मुगल तथा राजपूत कला की और ध्यान दिया।"[3] संयोगवंश हैवल की भैंट प्रसिद्ध चित्रकार अवनीन्द्रनाथ टैगोर से हुई और उन्होंने भारतीय चित्रकला की कक्षांए अवन्द्रिनाथ टैगोर के सहयोग से कलकता आर्ट स्कूल में प्रारम्भ की। यहाँ पर परम्परागत प्राचीन शैलियों अजन्ता, राजपूत, मुगल को आदर्श मानकर उनका अध्ययन कर चित्रण किया जाने लगा।

दूसरी ओर मद्रास, कलकता, बम्बई तथा लाहोर में भी कला शिक्षा पर शिक्षण दिया जा रहा था। देश में कला शिक्षा का उत्थान देशी व विदेशी कला शैलियों के मिश्रण से हो रहा था। जगह–जगह पर कला विद्यालय खोले जा रहे थे ओर कला शिक्षा प्रदान की जा रही थी। इन्ही शिक्षण स्थानों में से एक नाम था गर्वनमेंट आर्ट एण्ड क्राफ्ट स्कूल शिमला। जिसका अस्तित्व अतीत में खो गया।

आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला की पृष्ठभूमि

आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला की कहानी लाहौर स्कूल से आरम्भ होती है। यह बात उस समय की है जब ब्रिटिश शासकों ने भारतीय धर्म और संस्कृति को समाप्त करने के उद्देश्य से भारत में

1 डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ पृ. सं.–1
2 डॉ. प्रेमचन्द्र गोस्वामी, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ पृ. सं.–2
3 डॉ. अविनाश बहादुर वर्मा, भारतीय चित्रकला का इतिहास पृ.सं–270

विदेशी शिक्षण स्तर पर शिक्षा प्रदान करने के लिए जगह–जगह पर शिक्षण संस्थान खोले गए। इन्ही शिक्षण संस्थानों में से प्रमुख थे मद्रास, कलकता, बम्बई और लाहौर।

ब्रिटिश सरकार के अधिकार में पंजाब (लाहौर) में ब्रितानी शिक्षा पर आधारित कला विद्यालय खोला गया। "इस कला विद्यालय को आलंकारिक तथा व्याहारिक कला प्रशिक्षण देने हेतु 1875 ई० में स्थापित किया गया। जॉन लॉकवुड किपलिंग इसमें प्रथम प्रचार्य थे। यहाँ काष्ठ शिल्प, वास्तु शिल्प, ढलाई तथा अभयांत्रिकी आदि पाठ्यक्रम संचालित थे।"[1] शिक्षण संकाय के सदस्यों के रुप में, जिन्होंने इस संस्थान में अपनी सेवाएं दी उनमें बी० सी० सान्याल, धनराज भगत, एस० एल० पराशर, मुन्शी मिरन बक्श, अब्दुल रहमान चगुताई थे।

"sumarendra Nath Gupta became the first Indian principal of prestigious Art Institution in the year 1930 who was successor to British principal Lionel Heath."[2] समरेन्द्रनाथ गुप्ता इस कला संस्थान को नई दिशा प्रदान की तथा स्वदेशी कला को पुनः स्थापित करने में अपना योगदान दिया। "After the partion in 1947, the Mayo School of Art was also bifurcated into two, one part of the school was left in Pakistan (now known as National College of Art, Lahore), and another was set up in Shimla, the then capital of Punjab."[3] देश विभाजन भारतवासीयों के लिए एक बहुत दुःखद घटना थी जिसका असर कला के क्षेत्र में भी देखा गया। इन संस्थानों के लिए एक जटिल समस्या थी, इन्हें स्थापित कर निरन्तर चलाए रखना।

1 डॉ. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (1850 ई. से वर्तमान तक) पृ. सं.–21
2 D S Kapoor, History & Heritage, Government College Of Art Chandigarh (India) p.n.-38
3 D S Kapoor, History & Heritage, Government College Of Art Chandigarh (India) p.n.-39

गवर्नमेंट ऑर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला का विकास

"देश विभाजन के पश्चात् 1951 ई. में इसे मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट, लाहौर की एक शाखा के रूप में ''गवर्नमेन्ट स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स'' नाम से पंजाब की तत्कालीन राजधानी शिमला में स्थापित किया गया। लाहौर से कुछ अध्यापक भी यहाँ आये। उस समय इस कला विद्यालय में पाँचवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम चित्रकला, मूर्तिकला तथा कमर्शियल आर्ट अनुशासनों में संचालित थे। एस. एल. पाराशर, प्राचार्य तथा सतीश गुजराल उपचार्य थे।"[1] हिमाचल प्रदेश की वर्तमान राजधानी शिमला (समरहिल) में कला प्रेमी व कला शिक्षक सतीश गुजराल, एस० एल० पराशर और कुछ अन्य सदस्यों के द्वारा सरकार पर लगातार अनुनय और दबाव के बाद इस संस्थान को छात्रों तथा कला प्रेमियों के लिए आरम्भ किया गया। उन्हें संस्था के पुर्नगठन व विकास के लिए बहुत सीमित वितीय संसाधन प्रदान किये गए।

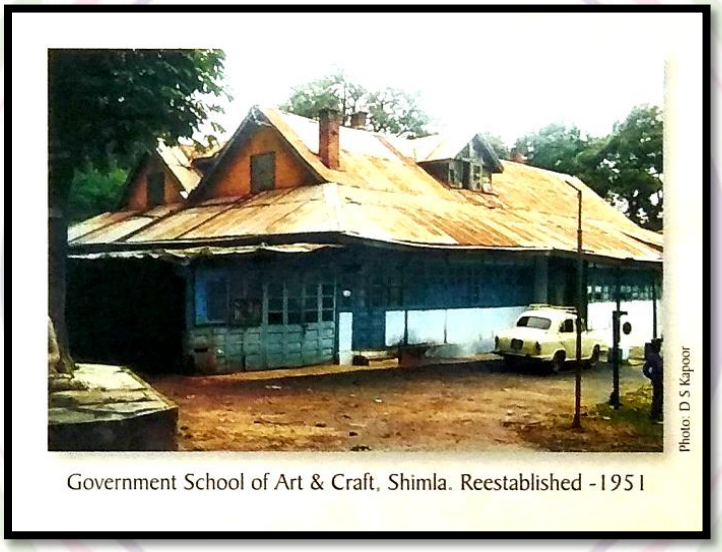

Government School of Art & Craft, Shimla. Reestablished -1951

गवर्नमेंट आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल, शिमला के प्रमुख शिक्षक व कलाकार

शिमला में शिक्षण संस्थान खुलने के पश्चात् एस० एल० प्राशर ने शिक्षकों की खोज जारी रखी और उन्होंने रचनात्मक लोगों के साथ हाथ मिलाकर कामयाबी हासिल कर ली। प्रान नाथ मागो, सतीश गुजराल, बलदेव राज रत्न, कंवल नेन, ए० सी० गोतम, सुमीरमल चटर्जी, अरुण बौस, पी० आर० त्रिवेदी, रोबिन मोहन चटर्जी, एन० के० डे एक प्रख्यात शिक्षक थे। वे कला के विभिन्न केन्द्रों के तहत विभिन्न शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षित थे, जैसे कलकता स्कूल ऑफ आर्ट, मेयो स्कूल ऑफ आर्ट लाहौर, विश्व भारती विश्वविद्यालय शांतिनिकेतन, सर जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई और दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट। इन कलाकारों ने इस संस्था की कला को समृद्ध करने के लिए मेहनत और

1 डॉ. ममता चतुर्वेदी, समकालीन भारतीय कला (1850 ई. से वर्तमान तक) पृ. सं.–25

लगन के साथ कार्य किया तथा साथ ही युवा मंच को उत्कृष्ट कला कोचिंग प्रदान करने की ओर भी ध्यान दिया। कंवल नेन और बी० आर० रत्न ने आखिरी तक कॉलेज में अपनी सेवाएँ दी।

इस संस्थान में बहुत से मास्टर क्राफ्टसमेन जैसे प्रितम सिंह, जीत सिहं, मास्टर हजारा सिंह, मास्टर सुजान सिंह, मघर सिंह, बेली राम को आभुषण डिजाइनिंग, हाथी दांत, इनटेक नक्काशी, धातु शीट कार्य आदि शिल्प कौशल की परंपरा को बनाए रखने के उद्देश्य के साथ प्रशिक्षण देने के लिए भर्ती किया गया। ये सभी अपने कार्य में सिद्धस्त थे। प्रिंसिपल एस० एल० पराशर की प्रेरणा से इन शिक्षकों को इस संस्थान में बहुत कम वेतन पर शामिल किया गया था। कला विद्यालय को सामान्य रुप से चलाने के लिए राष्ट्रपति निवास के नजदीक फायरली लोरज कोटेज, समरहिल में लाल बुरांश व बान के पेड़ों की सुन्द्रता के बीच आरम्भ किया गया। संस्थान बहुत उत्साह के साथ कार्य कर रहा था कि इसी बीच सतीश गुजराल को उनकी विकलांगता की वजह से संस्थान छोड़ना पड़ा। उनके स्कूल से निकलने के पश्चात् पराशर जी बहुत परेशान थे और उन्होंने उनके रिक्त स्थान की पूर्ति के लिए बंगाल के आशाजनक युवा कलाकार अरूण बोस को भर्ती किया गया। लेकिन उन्हें भी इस संस्थान को छोड़ना पड़ा क्योंकि वह गैर–मैट्रिक थे। अब संस्थान के सम्पूर्ण कार्यभार की जिमेवारी पराशर जी पर ही थी।

A painting studio of Government School of Art, Shimla
Photo Courtesy: Pritma Rattan, Indira Rattan D/o Baldev Raj Rattan

समय के साथ–साथ आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला कला और सांस्कृतिक केन्द्रों में से एक बन गया। इस संस्थान के छात्रों को शहर भर में देखा जा सकता है। वे आम तौर पर घाटी, द रिज, द मॉल और इसके आगे के दृश्यों को पेंटिंग और स्केचिंग में उतारते। छात्र और शिक्षक एक दूसरे से इतने करीब से जुड़े होते थे कि यह संस्थान कला घरानों में से एक बन गया था। इस संस्थान

में पाँच वर्ष के डिप्लोमा कोर्स के अलावा ड्राइंग मास्टर/आर्ट एण्ड क्राफ्टस टीचर के चार वर्ष और दो वर्ष की अवधि के शिक्षक प्रशिक्षण क्रमशः व्यापक पाठयक्रम प्रदान किए गए। मूर्ति कला और शिल्प अनुभाग लॉरज कॉटेज के नीचे थे। इस नाजुक ढाँचे के तहत मास्टर शिल्पकार और अन्य लोगों ने श्री पाराशर के रचनात्मक एवं सक्षम मार्गदर्शन में अत्यन्त समर्पण के साथ अपनी मूल शैली में काम किया, जिन्होंने न केवल परंम्परा को बनाए रखा बल्कि आधुनिकता की ओर भी कदम रखा।

"S.L. Parasher retired in 1959 and Sushil Sarkar replaced him as principal in the year 1960. He was an eminent Artist and a protagonist of the Bengal School of Art."[1] उन्होंने विभिन्न कलात्मक गतिविधियों में भाग लिया तथा गतिविधियों के माध्यम से कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया।

गवर्नमेंट आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला का स्थानातरण

"हिमाचल प्रदेश की स्थापना 15 अप्रेल 1948 को 30 पहाड़ी तथा शिमला की रियासतों के विलय के साथ की स्थापना की गयी।[2] पंजाब राज्य के पुनर्गठन के समय पंजाब को दो प्रदेशों पंजाब तथा हरियाणा में विभाजित किया गया और पंजाब की नई राजधानी चण्डीगढ़ को बनाया गया।

Aerial View of Government College of Art, Chandigarh

"when Chandigarh camp up as the new capital of Punjab, the school of Art shifted here in 1962. Situated in the heart of the city, the camps has been beautifully designed as a composite Cultural Complex by the great French Architect Le-Corbusier, The building is surrounded by vast green lawns along side the leisure valley against the beautiful backdrop of the Shivalik Hills."[3] पंजाब राज्य के पुनर्गठन के बाद इस संस्था का नियंत्रण चण्डीगढ़ प्रशासन के पास आ गया और संस्थान का नया नाम गवर्नमेंट ऑर्ट एण्ड क्राफ्टस कॉलेज चण्डीगढ़ रखा गया। इस प्रकार धीरे–धीरे आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला का अस्तित्व अतीत में खो गया।

1 D S Kapoor, History & Heritage, Government College Of Art Chandigarh (India) p.n.-40
2 जगमोहन बलोखरा, हिमाचल प्रदेश सामान्य ज्ञान, संकलन सहयोग, पृ०,सं०–5
3 D S Kapoor, History & Heritage, Government College Of Art Chandigarh (India) p.n.-40

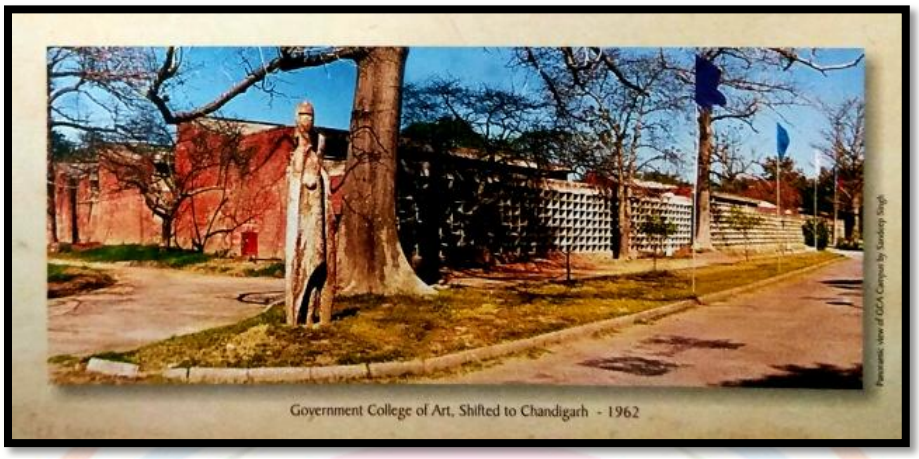

जवाहर लाल नेहरू ललित कला विद्यालय शिमला आशा की नई किरण

आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला, चण्डीगढ़ स्थानातरित होने के पश्चात् हिमाचल प्रदेश में कला विषय को प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला तथा गवर्नमेंट कॉलेज– संजोली, सोलन, कोटशेरा, राजकीय कन्या विद्यालय शिमला तथा धर्मशाला में नियमित विषय चित्रकला, मूर्तिकला व वाणिजय कला के रूप में पढ़ाया जाने लगा।

हिमाचल प्रदेश की कला व संस्कृति के विकास में आशा की नई किरण तब जागृत हुई जब 2015 में प्रदेश की तत्कालीन सरकार ने प्रदेश में ललित कला विद्यालय खोलने की घोषणा की गई। वर्तमान में यह संस्थान प्रदेश की राजधानी शिमला के डिग्री कॉलेज कोटशेरा में चलाया जा रहा है। इस संस्थान के खुल जाने से प्रदेश ही नहीं देश–विदेशी के विद्यार्थी भी लाभाविन्ति होंगे तथा प्रदेश की कला संस्कृति को बढ़ावा मिलेगा।

परिणाम

आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला की कला यत्रा में चाहे जितना भी उतार–चाढ़ाव आया हो फिर भी इसका अपना महत्व रहा। इस स्कूल के साकारत्मक व नाकारत्मक परिणाम सामने आते हैं। साकारात्मक परिणाम यह है कि प्रदेश में इस संस्थान के खुल जाने से यहाँ के लोग आधुनिक कला से परिचित हुए। जिससे हिमाचल प्रदेश की कला में को एक नई दिशा मिली। इसके नाकारात्मक परिणाम यह है कि इस संस्थान के चण्डीगढ़ स्थानातरित हो जाने के कारण प्रदेश के कला विकास को बहुत धक्का लगा और इस संस्थान के सथानातरित हो जाने के पश्चात् प्रदेश में लगभग एक दशक तक कला शिक्षा के लिए प्रमुख केन्द्र नहीं था जिस कारण प्रदेश में कला में रूचि रखने वाले लोग कला शिक्षा से वंचित रहे।

निष्कर्ष

मुगल व राजपूत कला के अन्त में ही हिमालय के पहाड़ी राज्यों में पहाड़ी कला का उद्भव होने लगा। इन राज्यों में से विख्यात एक राज्य हिमाचल प्रदेश (पंजाब) था जहाँ पहाड़ी चित्रकला का उद्भव होने लगा। अपितु यह कहना उचित न होगा यदि यह कहा जाए कि लोक कला का विकास हुआ जिसमें शैली व विषयों के आधार पर पहाड़ी कला का उद्भव माना जाता है। जहाँ से पहाड़ी कला का विकास होने लगा। प्राचीन समय से ही पहाड़ी चित्रकला गुरू–शिष्य परम्परा पर आधारित रही है जो आज भी प्रदेश के कुछ स्थानों पर विद्यामान है। भारत में ब्रिटिश शासन के समय जगहों–जगहों पर स्कूल खोले गए। इन स्कूलों में मुख्यत मद्रास, कलकता, बम्बई, लाहौर थे। भारत विभाजन के समय लाहौर स्कूल दो भागों में विभाजित हो गया जिसका एक भाग पाकिस्तान में राष्ट्रीय कॉलेज लाहौर के नाम से आरम्भ हुआ तथा दूसरा भाग हिमाचल प्रदेश (पंजाब) की राजधानी शिमला में आर्ट एण्ड क्राफ्टस स्कूल शिमला के नाम से समरहिल के नजदीक आरम्भ हुआ। इस स्कूल के आरम्भ होने से प्रदेश की आम जानता, कला प्रेमी और छात्रों को आधुनिक कला को देखने समझने का मोका मिला। लौकिन समय के साथ–साथ यह स्कूल राजनितिक प्रभावों के कारण पंजाब की नई राजधानी चण्डीगढ़ स्थानातरित किया गया। जिसके कारण प्रदेश की आधुनिक कला के क्षेत्र में नियमित विकास न हो सका। धीरे–धीरे विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालय में कला के विषय आरम्भ होने से कला क्षेत्र में निरन्तरता देखी गयी। 2015 में प्रदेश में ललित कला विद्यालय आरम्भ होने से कला के क्षेत्र में प्रगति होने लगी है जो हिमाचल प्रदेश के लिए गर्व की बात है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि

1 गोस्वामी, डॉ. प्रेमचन्द्र, आधुनिक भारतीय चित्रकला के आधार स्तम्भ, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
2 चतुर्वेदी, डॉ. ममता, समकालीन भारतीय कला (1850 ई. से वर्तमान तक), राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3 बलोखरा, जगमोहन, हिमाचल प्रदेश सामान्य ज्ञान, संकलन सहयोग
4 वर्मा, डॉ. अविनाश बहादुर, भारतीय चित्रकला का इतिहास, प्रकाश बुक डिपो, बरेली
5 Kapoor, D S, History & Heritage, Government College Of Art Chandigarh